Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यावरण संरक्षण की चुनौतिया: गाँधीय विकल्प

गोपाल सिंह*

* असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) शेखावाटी महाविद्यालय, लोसल, (सीकर) (राज.) भारत

शोध सारांश – पर्यावरण समस्त जीवन का आधार है जिस तरह एक स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का निवास होता है। ठीक उसी तरह स्वच्छ पर्यावरण में स्वस्थ जीवन का निवास होता है। किन्तु मानव आज अपने जीवनदायिनी पर्यावरण को अप्राकृतिक गतिविधियों से असन्तुलित कर रहा हैं। सभ्यता के शैशव काल से मानव जाति पर्यावरण से अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करती आ रही है। लेकिन विगत कुछ दशकों में मनुष्य की स्वाभाविक स्वार्थी प्रकृति के कारण पर्यावरण का निरन्तर ह्रास हुआ है। वर्तमान आधुनिकता की दौड़ एवं अधिक उपभोग की प्रवृति ने मानव को मशीनीकरण की ओर उन्मुख कर दिया है। जिसकी प्राप्ति हेतु पर्यावरण के हर पहलू को नुकसान पहुँचाया जाता हैं। IUCN (अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ) के ताजा आकड़ों के अनुसार 5583 जीवों की प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर है। जो प्रकृति की जैव विविधता के लिए खुली चुनौति है यह सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए चिन्ता का विषय है। यदि समय रहती वैश्विक स्तर पर आम लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं कर्तव्य निष्ठा की भावना उत्पन्न नहीं की जाती है तो मानव सहित समस्त प्राणियों का जीवन संकट में हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों में गाँधीजी के विचार प्रासंगिक हैं उनके अनुसार भारतीय संस्कृति में प्राचीन समय से ही पर्यावरण संरक्षण की समुचित व्यवस्था है। जिसका आधार सदियो से चली आ रही वृक्ष पूजा है। गाँधी जी जहाँ एक तरफ आस – पास के वातावरण को स्वच्छ रखने पर बल देते थे वहीं दूसरी तरफ अहिंसा के अन्तर्गत समस्त प्राणियों की रक्षा पर जोर देते थे। उन्होनें उत्पादन की ऐसी पद्धति को वाछंनीय माना है जो प्रकृति को दोहन व शोषण से मुक्त रखकर मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हो। गाँधीजी के अनुसार 'प्रकृति में मानव जीवन की आवश्यकता के लिए सब कुछ हैं, किन्तु लालच के लिए नहीं।' पर्यावरण की रक्षा एवं मानव विकास एक साथ कैसे हो, इस पर विश्वव्यापी बहस छिड़ी हुई है। गाँधीजी की विचारधारा ये बताती है कि पर्यावरण की शुद्धता व सरंक्षण प्रत्येक बुद्धिजीवी का नैतिक दायित्व होना चाहिए। गाँधी जी के आदर्शो से प्रेरित होकर भारत सरकार द्वारा शुरु किया गया स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण हेतु एक अनुठी मिशाल हैं।

शब्द कुंजी – पर्यावरण, संरक्षण, सभ्यता, आधुनिकता, मशीनीकरण, गाँधीजी, संस्कृति, अहिंसा, शोषण, श्रम, बुद्धिजीवी, एवं संवेदना।

प्रस्तावना – प्रकृति की वह सुन्दर व्यवस्था जिससे जीवन की उत्पति एवं विकास सम्भव हुआ है। सरल शब्दों में पर्यावरण हैं। तुलसीदास जी के शब्दों में 'क्षिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित यह अधम शरीरा।' अर्थात पाँच तत्वों से मनुष्य शरीर का निर्माण हुआ है और प्रकृति इनसे इतर नही हैं। सृष्टि के उद्भव से ही मनुष्य अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति इसी पर्यावरण से करता आ रहा है। आयुर्वेद के अनुसार शरीर में वात, पित एवं कफ का साम्य रहता है। यदि इनमें से एक भी कम – ज्यादा होता है तो शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार प्रकृति का भी एक निश्चित जैव चक्र है जो सन्तुलित रुप से पर्यावरण के विकास के लिए चलता रहता है। यदि इसमें परिवर्तन होता है तो पर्यावरण असन्तुलित होगा जिसके परिणाम भी भंयकर होगें। मनुष्य की बढ़ती आकांक्षाओं ने प्रकृति को अत्यधिक क्षति पहुँचाई है जिसके कारण इसका सन्तुलन बिगड रहा है। पृथ्वी का बढ़ता हुआ तापामान, गिरता हुआ भू–जल स्तर, हिमस्खलन , पिघलते ग्लेशियर , बदलता मौसम चक्र एवं घटती हुई जैव विविधता इसी का परिणाम है। विश्व में पायी जाने वाली 84 लाख प्रजातियों में से वर्तमान में प्रतिदिन लगभग 100 प्रजातियाँ विलुप्त हो रही है। तथा वे दिन दूर नही कि विलुप्त होने वाली प्रजातियों में मानव प्रजाति के अस्तित्व पर भी खतरा हो सकता हैं। IUCN (अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ) की रिपोर्ट के अनुसार 5583 जीवों की प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर है ,जो चिन्ता का विषय है। आज सम्पूर्ण विश्व के सामने यह चुनौति है कि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए पर्यावरण को भी संरक्षित करे।

पर्यावरण असन्तुलन के कारण – 21वी सदी के वैश्विक परिदृश्य में विकास की सम्भावनाओं के साथ साथ अनेक समस्याएँ एंव चुनौतियाँ भी है जिनमें से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप से पर्यावरण सुरक्षा सीधी चुनौति है। क्योंकि मनुष्य के जीवन का सम्बन्ध पर्यावरण से है। पर्यावरण असंतुलन के कुछ मूलभूत कारण निम्न है–

1. **मानव स्वार्थ –** मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए एवं दैनिक जीवन में अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु काष्ठीय सामग्री का उपयोग करता है। जिसके लिए वह बड़े–बड़े विशालकाय जंगलो एवं वृक्षों की कटाई करता है जिससे नष्ट हुए स्थान विशेष में उपस्थित जीव जंतु के नष्ट होने से खाद्य श्रृंखला व खाद्य जाल असंतुलित हो जाता है। तथा खाद्य श्रृंखला में किसी एक पोषक स्तर के नष्ट होने से पारिस्थितिकी तंत्र विक्षुब्द हो जाता है, जो कि प्राकृतिक आवास को बहुत बड़ा खतरा है। एक खाद्य श्रृंखला में (एक विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र) हर एक पोषक स्तर एंव उत्पादकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनकी संख्या मे कमी से पूरा पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाता है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे– अकाल, भूस्खलन, ग्लोबल वार्मिंग, भूकंप आदि।
2. **जनसंख्या वृद्धि –** 'आबादी का बढ़ता बोझ साधन घटते जाते रोज।'

जनसंख्या वृद्धि के कारण मानव अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु प्राकृतिक संसाधनों का अनियमित एवं अत्यधिक मात्रा में विदोहन करता है। विश्व की बढ़ती आबादी के साथ- साथ विकास हेतु प्राकृतिक संसाधनों की अधिक आवश्यकता हुई है। इसके साथ ही आवास, भोजन एवं मकान की अत्याधुनिक प्रतिस्पर्धा ने व्यापक स्तर पर कृषि व औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार किया है। जिससे वन क्षेत्रो में बड़े स्तर पर कटौति की जा रही है जो कि प्रत्यक्षत: पर्यावरण असंतुलन का कारण है।

3. नगरीकरण- बढ़ती आबादी के साथ - साथ न केवल शहरों का आकार बढ़ रहा है अपितु ग्रामीण क्षेत्रों का भी शहरीकरण होता जा रहा है। बढ़ते शहरीकरण के कारण वन सम्पदा एवं वन क्षेत्रों में कमी हुई हैं। परिणामत: अनेक जन्तु एवं पादप प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी है। तथा कुछ विलुप्ति के कगार पर है। शहरों में प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकता पूर्ति हेतु अधिक उपभोग होता है। जीवाश्म ईंधन वाहनों के प्रयोग तथा बढ़ते उधोगों के कारण हवा प्रदूषित हो रही है। इस प्रदूषित हवा में धूल एवं कार्बन के कणों के फैलने के कारण श्वसन सम्बन्धी रोग पैदा होते हैं।

4. उपभोग की लालसा एवं बदलती जीवनशैली- मानव अपने जीवन को सुविधापूर्ण एवं सुगम बनाने हेतु खाद्य पदार्थो के परिरक्षण एवं अपने आवास स्थानों को अनुकूलित वातावरणीय बनाये रखने के लिए ए. सी व रेफ्रीजरेटर का अधिक मात्रा में उपभोग करता है। जिनमें सी.एफ. सी. (क्लोरो -फलोरो कार्बन) का उपयोग किया जाता है। यह सी.एफ. सी. वातावरण में मुक्त हो कर ओजोन परत का क्षय करता है। जिससे सूर्य की पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर सीधी पहुँचती है इन विकिरणों के कारण कैंसर जैसे हानिकारक रोग होते हैं।

5. नैतिक मूल्यों का ह्रास - आदिकाल से मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहा है। परन्तु वर्तमान समय में नैतिकता विहिन आचरण के कारण मनुष्य स्वयंस्वार्थ सिद्धि के लिए प्रकृति के साथ अनावश्यक एवं अत्यधिक छेड़ छाड़ कर रहा हैं यहाँ तक की शिक्षित व्यक्ति भी लगभग इसी श्रेणी में शामिल होते हैं। यह नैतिक मूल्यों के ह्रास का ही परिणाम है कि व्यक्ति की कथनी एवं करनी में अन्तर आ गया है।

जैसे - सोशल मिडिया पर पर्यावरण के लिए जागरूक दिखने वाला व्यक्ति धरातल पर ऐसा कार्य करता हुआ दिखाई नही देता।

पर्यावरण असंतुलन के दुष्परिणाम- प्रकृति से निकटता ही समस्त जीवों की खुशहाली एवं समृद्धि का प्रतीक है लेकिन मानव ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति के विरूद्ध कार्य किया है। मनुष्य द्धारा किया गया हर एक आविष्कार आर्थिक उन्नति के साथ- साथ जीवन को सुगम बनाता है लेकिन इन आविष्कारों की कीमत प्रकृति को चकानी पड़ती है। असंतुलित पर्यावरण का विनाशकारी प्रभाव निम्न स्वरूपों मे सामने आ रहा है जैसे -

1. जैव विविधता का नुकसान- वनों का विनाश, अवैध शिकार एवं मानव व जीवों के मध्य बढ़ रही प्रतिस्पर्धा के कारण जैव विविधता पर गंभीर संकट हैं। जैव विविधता मानव अस्तित्व के लिए अति आवश्यक है पुरातन समय में कई गंभीर रोगों का ईलाज पादप प्रजातियों द्धारा किया जाता था। जैव विविधता के नुकसान से वर्तमान में कई पादप प्रजातियाँ (जड़ी - बूटियाँ) लुप्त हो चुकी है। शायद इनमें कैंसर जैसी भयानक बिमारियों का ईलाज सम्भव था। आई. यू. सी.एन. (अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ) की रिपोर्ट के अनुसार 5583 प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर है। मानव द्धारा इन अमूल्य प्रजातियों को नुकसान पहुँचाना स्वयं मानव अस्तित्व को मिटाने के समान है।

2. ग्रीन हाउस गैंसो का प्रभाव - औद्योगिकीकरण एवं तकनीकी युग में आयुध परीक्षणों तथा जीवाश्म ईंधनों के उपयोग के कारण CO_2 (कार्बनडाई ऑक्साइड) की प्रतिशतता पर्यावरण में बढ़ गयी है। इसके साथ ही अन्य ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में भी वृद्धि हुई है। सूर्य से आने वाली विकिरणें पृथ्वी के धरातल पर टकराने के बाद पुन: परावर्तित होकर अन्तरिक्ष की ओर चली जाती है लेकिन ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण ये विकिरणें पुन: पृथ्वी की ओर लौट आती है जिससे पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होती है। यह स्थिति ग्लोबल वार्मिंग के लिए उत्तारदायी है। एक सामान्य अध्ययन में पता चला है कि प्रति वर्ष जहरीली गैंसों से उत्पन्न होने वाली बिमारियों के कारण लगभग 70 लाख लोग मर रहे हैं।

3. जलवायु एवं मौसम चक्र में असमय परिवर्तन - प्रकृति के जैविक एवं अजैविक घटकों के मध्य होने वाली अन्त:क्रिया के प्रभावित होने से पृथ्वी पर विभिन्न रूपों में कई हानिकारक प्रभाव देखे जा सकते हैं। असंतुलित पर्यावरण के कारण पृथ्वी पर मनुष्य वनस्पति व पशुओं पर खतरा मंडरा रहा है। जलवायु तथा मौसम चक्र की अनियमितता के कारण निम्न प्रभाव पड़ते है। जैसे- ऋतुओं का समय कम - ज्यादा होना, अतिवृष्टि व अनावृष्टि, ग्लोबल वार्मिंग, औसत वर्षा में कमी एवं अचानक तापमान में परिवर्तन होना।

4. सिकुड़ते ग्लेशियर- बढ़ते तापमान के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं। जिससे जल स्तर में वृद्धि हो रही है। इससे न केवल समुद्री जीवों को खतरा है बल्कि तटवर्ती क्षेत्रों के जलमग्न होने की सम्भावनाऐं बढ़ रही है। इसके साथ ही चट्टानों के विलुप्त होने की स्थिति के कारण मानव व समस्त प्राणी जगत के लिए एक बड़ा खतरा है।

5. मरूस्थलीकरण में वृद्धि - UNEP (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम) के अनुमानों के अनुसार पृथ्वी का एक चौथाई हिस्सा मरूस्थलीकरण होने के कगार पर है। जिसके कारण 100 देशों में लगभग एक अरब से अधिक लोगों की आजीविका खतरे में हैं। पर्यावरण असंतुलन के कारण बढ़ रहे इस मरूस्थल के लिए निम्न कारक उत्तारदायी है। जैसे जरूरत से ज्यादा कृषि करना, अधिक चराई, नवीनीकरण एवं वनों की कटाई आदि।

6. प्रदूषित वातावरण - प्रकृति के विरूद्ध किये जाने वाले कार्यो के कारण प्रदूषण में वृद्धि हुई है। प्रदूषण की यह स्थिति जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि या मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एवं नाभिकीय प्रदूषण के रूप में देखी जा सकती हैं। व्यक्ति स्वयं इसके लिए जिम्मेदार है क्योंकि अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु मानव ने जल, भूमि एवं वायु का किसी भी कीमत पर अधिक से अधिक दोहन एवं दुरूपयोग किया है। आज समुद्री जीवों को खतरा, पीने योग्य जल का अभाव, प्रदूषित हवा, श्वसन एवं प्रजनन सम्बंधी रोग एवं मृदा की गुणवत्ता में कमी का होना इस प्रदूषित वातावरण के ही प्रमाण है।

उद्देश्य

पर्यावरण संरक्षण हेतु गाँधीवादी विचारधारा एक विकल्प- पर्यावरण असंतुलन आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक विकट समस्या है। विडम्बना यह है कि पर्यावरण जैसे सवेंदनशील मुद्दे पर कुछ राष्ट्रों के प्रयासो के विपरीत विकसित एवं विकासशील राष्ट्र स्थाई समाधान न खोजकर एक दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में आज गाँधीवाद प्रासंगिक हो जाता है। गाँधीजी का स्पष्ट मत था कि पर्यावरण की कीमत पर विकास नहीं करना चाहिए पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ मे आज गाँधीवादी दृष्टीकोण निम्न बिन्दुओं के आधार पर एक सर्वश्रेष्ठ विकल्प के रूप में है।

1. **पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय संस्कृति –** गाँधीजी ने भारतीय जीवन दर्शन को बहुत गहराई से समझा और इसी आधार पर इस विकट समस्या का सहज हल भी प्रस्तुत किया। हमारे धर्म ग्रन्थो मे कहा गया है कि 'एक वृक्ष सौ पुत्र समान' । यह उक्ति भारतीय जन मानस में पर्यावरण के महत्व को व्यक्त करती है। हिन्दु संस्कृति में तुलसी पूजा , पीपल पूजा ,आँवला पूजा, वट सावित्री व्रत आदि परम्पराएँ भारतीय सभ्यता व प्रकृति में आत्मीयता के भाव को व्यक्त करती है। हिन्दु संस्कृति में नदियों व पर्वतों को भी देवी –देवताओ की संज्ञा दी गई है। जो एक दूसरे के पोषण के द्वारा उन्नति का भाव व्यक्त करता है , और यही मुख्य कारण है कि सदियों पुरानी यह सभ्यता पर्यावरण संतुलन के साथ फली– फूली व विश्व की सिरमौर रही है। गाँधीजी का मत था कि हिन्दु जीवन पद्धति के अनुसार जीवन जीया जाये तो मानव जाति सहज ही पर्यावरण का पोषण करते हुए विकास करेगी।

2. **पर्यावरण संरक्षण एवं अहिंसा –** गाँधीजी का अहिंसा सिद्धान्त बहुत व्यापक है। जो लोग अहिंसा का दायरा मानव जाति तक सीमित रखते है वे अधूरा ज्ञान रखते है जब तक प्राकृतिक संसाधनो, वनस्पतियों, नदियों , पर्वतो के साथ – साथ पशु पक्षियों को आवास सुलभ कराने वाले स्थानों की कीमत पर चलने वाली औद्योगिक पद्धति को बदलकर उसे मानव श्रम तथा प्रकृति की संगति पर आधारित नही करते है तब तक अहिंसा अपने अर्थो मे पूर्ण नही हो सकती। गाँधीवाद सिर्फ हमें मानव हत्या के खिलाफ ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीव हत्या के सामने खड़ा करता है भारत में सुन्दरलाल बहुगुणा का वृक्षों को बचाने के लिए किया गया चिपको आन्दोलन एवं मेधा पाटेकर द्वारा शुरू किया गया नर्मदा बचाओं आन्दोलन गाँधीवादी विचारो से प्रेरित है जो पर्यावरण रक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में मिशाल है।

3. **पर्यावरण संरक्षण व कुटीर उद्योग–** गाँधीजी की पुस्तक हिन्द स्वराज के अनुसार 'ऐसा नहीं है कि हमें मशीनो की खोज करना नहीं आता था लेकिन हमारे पूर्वजों ने देखा कि लोग यंत्र पर आश्रित रहेगें तो गुलाम ही बने रहेगें इसलिए हमें हाथ पैरो से काम करने की नीति अपनाकर सच्चा शारीरिक व मानसिक सुख प्राप्त करना है, वे भारतीय कुटीर उद्योग ही थे जिनसे तैयार मलमल का थान एक अंगुठी में से निकल जाता था। लघु उद्योग आर्थिक विकेन्द्रीकरण का प्रमुख साधन है और यही आज के मशीनीकरण का प्रमुख समाधान है। जिससे रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त किये जा सकते है । कुटीर उद्योगों से ही गांवो से शहरो की ओर पलायन रूकेगा जिससे शहरों मे संसाधनो पर बढ़ते भार में कमी होगी और पर्यावरण का भी संरक्षण होगा। गाँधीजी की दृष्टि में उद्योग शिल्प ही ऐसी चीज थी जिसकी बदौलत मनुष्य भोजन , वस्त्र , आवास जैसी आवश्यकताओं के लिहाज से स्वावलंबी रहता आया था और प्राणी भी सुरक्षित थे, न कभी पर्यावरण का संकट आया न ग्लोबल वार्मिंग का खतरा और ना ही किसी पशु पक्षी व वनस्पति के समाप्त होने का खतरा।'

4. **पर्यावरण संरक्षण एवं न्यासिता का सिद्धान्त –** गाँधीजी के शब्दों मे 'संसाधन पेट भरने के लिए है पेटी भरने के लिए नहीं' उपरोक्त कथन न केवल उपभोक्तावादी संस्कृति पर प्रहार करता है अपितु मानवीय स्वभाव की भौतिक इच्छा व तृप्ति के स्थान पर संयम व त्याग का मार्ग प्रशस्त करता है। गाँधीजी के यह आदर्श विचार हमें याद दिलाते है कि पृथ्वी हमें अपने पूर्वजो से उत्ताराधिकार मे नहीं मिली है अपितु यह हमारे पास भावी पीढ़ियों की धरोहर है । प्राकृतिक संसाधनो का सयंमित व नियंत्रित उपयोग करके इन्हे भविष्य के लिए बचाया जा सकता हैं। गाँधीजी का न्यासिता का सिद्धान्त हमें यह सिखाता है कि 'प्रकृति की धरोहर का मिलजुल कर सदुपयोग किया जाए न की इस पर कुछ लोगों का एकाधिकार हो' क्योंकि इससे संसाधनो के दुरूपयोग की सम्भावनाएँ बढ़ जाती है जो कि पर्यावरण के विरूद्ध है। गाँधीजी ने स्वयं दो वस्त्रों में जीवन जी कर लोगो के सामने संयमित जीवन का आदर्श रखा कि अपनी इच्छाओं को कैसे नियंत्रित किया जा सकता है। समय की आवश्यकता है कि आज की युवा पीढ़ी उनके आदर्शों पर चले। इस प्रकार सयंमित जीवन से प्रकृति व मानव जाति का बहुत भला होगा।

5. **पर्यावरण संरक्षण एवं जन चेतना –** गाँधीजी का स्पष्ट मत था कि बिना जन – चेतना के कोई भी कार्य संभव नहीं है। और यह उन्होनें अपने जीवन में चरितार्थ भी किया था केवल जन – चेतना के माध्यम से उन्होनें विदेशी शासकों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। गाँधीजी की दांडी यात्रा जल, जंगल और जमीन से लोगों को प्रकृति के प्रति जागरूक करने का माध्यम था। इस घटना से उन्होनें यह बताया कि किसी लोकहित कारी मुहीम से समाज के निचले स्तर तक के लोगों को किस प्रकार से जोडा जाए जिससे कि जन जागरूकता के आधार पर पर्यावरण का अस्तित्व बना रहे। आज के सोशल मिडिया युग में जन जागृति पर्यावरण संरक्षण का सशक्त माध्यम है।

निष्कर्ष– वर्तमान परिपेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण एक ज्वलन्त मुद्दा है। यह एक देश का विषय न होकर वैश्विक स्तर का विषय बन चुका है। प्रत्येक राष्ट्र के द्वारा पर्यावरण संरक्षण को अपनी राष्ट्र नीति में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए तथा विकास की नितियाँ लागू करते समय पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। आज कानूनों के साथ – साथ गाँधीजी के नैतिक आदर्शो, विचारों , सिद्धान्तों एवं प्रकृति के प्रति उनके उदार दृष्टीकोण को जन मानस तक प्रचारित करने की आवश्यकता है। इस के लिए सोशल मिडिया को अग्रणी पहल करनी होगी। यूवाओं में प्रकृति के प्रति प्रेम, आदर की भावना एवं सादगीपूर्ण जीवन की समझ विकसित करनी होगी। मूलत: गाँधीजी ने मनुष्य के नैतिक चरित्र व मनोदशा को परिवर्तित करने तथा उपभोग के नियमन व इच्छाओं के नियत्रंण का जो संदेश दिया था वह आज के तकनीकी युग में मानव के भविष्य की रक्षा के लिए पर्यावरणवाद का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त बन चुका है। वैज्ञानिको ने भी इस मत को स्वीकार कर लिया है कि सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण रक्षा की सार्थक पहल ही इसके संरक्षण के प्रयासों में गति ला सकती है। आज गाँधीजी की प्रकृति एवं सभी जीवों के प्रति गहरी संवेदना एवं विचारदृष्टी को पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में ग्रहण किये जाने की सख्त आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. प्रो. जे.पी सूद (आधुनिक राजनीतिक विचारों का इतिहास) के. नाथ एण्ड पब्लिकेशन कम्पनी, मेरठ – यूपी।
2. ओ.पी. गाबा (राजनीतिक सिद्धान्तो की रूपरेखा, भारतीय राजनीतिक विचारक) मयूर पेपर बुक्स, इन्दिरा पूरम ।
3. डॉ. मेधा तिथि जोशी (पर्यावरण अध्ययन की रूप रेखा) आर. बी.डी पब्लिसिंग हाउस, जयपुर एवं नई दिल्ली ।
4. डॉ. ललिता झा (पर्यावरण अध्ययन) कॉलेज बुक हॉउस चौड़ा रास्ता, जयपुर।
5. डॉ. मधुकर श्याम चतुर्वेदी एवं डॉ. इनाक्षी चतुर्वेदी (प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक) कॉलेज बुक हॉउस चौड़ा रास्ता, जयपुर।
6. डॉ. श्रीराम वर्मा (भारतीय राजनीतिक विचारक) कॉलेज बुक सेन्टर चौडा रास्ता, जयपुर।